पद १२५

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी)

ब्रह्म डोळियाचा डोळा। सर्व जीवाचा जिव्हाळा।।१।। ज्ञान स्वरूपा ब्रह्म म्हणा। महावाक्य मनीं आणा।।२॥ पाहे ऐके बोले वाणी। ब्रह्मशक्तिची ही करणीं।।३॥ आत्मप्रकाश निश्चल स्थिति। प्रखर तेजीं निपजे गित।।४॥ प्राण वाहे इंद्रिय वाटा।

स्फूर्ण शक्तिच्या ह्या लाटा।।५॥ समुद्र स्वभाव प्रगटे क्षारीं। ज्ञान सिंधु जाणिव लहरी।।६॥ आपणां भोगणें ना करणें। प्राण धर्म उठणें बसणें।।७॥ स्वप्न सुषुप्ति जागृति। जाणें आत्मलहरीं वृत्ति।।८॥ पंचभूत तत्त्व मूळ। आत्मशक्तीचा हा खेळ॥९॥ जड मन करीं कर्मा। आत्मसंयोगाचा महिमा।।१०॥ सकलमतीं माणिक तेज। अर्थज्ञानें मुक्ति सहज।।११॥ भजा ज्ञानमार्ताण्डा। सोडा अनेक मत पाखांडा।।१२॥